श्री हनुमान

श्रद्धा और चमत्कार की कथाएं

अनुसूची

अध्याय/विषय	पृष्ठ
अध्याय 1: दिव्य फल से हनुमान जन्म	2
अध्याय 2: पुत्र पर वार से पवन देव का क्रोध	5
अध्याय 3: हनुमान जी अपनी शक्तियां क्यों भूल गए	9
अध्याय 4: हनुमान और उनके पुत्र मकरध्वज की गाथा	13
अध्याय 5: मृत्युदंड पाने के बाद भी हनुमान को राम जी मार न सके	16
अध्याय 6: गदाधारी भीम का घमंड भी उतार दिया	20
अध्याय 7: अर्जुन का अहंकार भी हनुमान जी ने तोड़ दिया	24
अध्याय 8: हनुमान ने शनिदेव को रावण के चंगुल से मुक्त कराया	27
अध्याय 9: छह महीने बाद हनुमान जीवित हुए	30
अध्याय 10: हनुमान जी के प्रकोप से कर्ण मरते - मरते बचा	33
अध्याय 11: हनुमान जी ने रूद्र मंत्र से बंधे यमराज की बेड़ियां तोड़ दी	36

दिव्य फल से हनुमान जन्म

अंजना माता: (प्रार्थना करते हुए) "हे महादेव, मेरी गोद खाली है। मुझे एक पुत्र का आशीर्वाद दें, जो संसार में धर्म की स्थापना करे।"

महादेव: (दिव्य आवाज में) "अंजना, तुम्हारी तपस्या और भक्ति मुझे प्रसन्न करती है। उचित समय पर तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। धैर्य रखो।"

(दृश्य बदलता है – अयोध्या)

ऋषि: "हे महाराज दशरथ, पुत्र कामना के लिए यह यज्ञ फलदायक होगा। इसे पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न कराएं।"

दशरथ: "ऋषिवर, आपके निर्देशानुसार मैं यह यज्ञ आरंभ करवाता हूँ। मेरी तीनों रानियों को यज्ञ का प्रसाद मिलेगा।"

(यज्ञ संपन्न होता है, फल का वितरण होता है। लेकिन तभी एक पक्षी वह फल ले उड़ता है।)

पक्षी: (अपने मन में) "यह दिव्य फल मुझे किसी विशेष उद्देश्य के लिए मिला है। इसे कहाँ गिराऊँ?"

(पर्वत के पास फल गिरता है, जहाँ अंजना माता ध्यान में लीन हैं।)

अंजना माता: (आश्चर्यचकित होकर) "यह फल यहाँ कैसे गिरा? यह साधारण नहीं लगता। शायद महादेव की कृपा है।"

(महादेव की प्रेरणा से फल खा लेती हैं।)

महादेव: (दिव्य आवाज में) "अंजना, यह फल मेरे आशीर्वाद का प्रतीक है। इससे तुम्हारे गर्भ में मेरा अंश जन्म लेगा, जो धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश के लिए अवतार लेगा।"

(कुछ समय बाद हनुमान जी का जन्म होता है।)

वृद्ध (गाँव में): "यह बच्चा अद्भुत तेजस्वी है। इसका जन्म दिव्य संकेत है।"

ऋषि: (गाँव वालों को समझाते हुए) "यह बालक कोई साधारण नहीं है। यह स्वयं महादेव का अंश है। यह बजरंगबली है,जो संसार में धर्म की रक्षा करेगा।"

वृद्ध: "अंजना माता धन्य हैं! और देखो, इसका जन्म कैसे राजा दशरथ के पुत्र भरत के समान काल में हुआ है। सच में, यह दोनों भाई जैसे लगते हैं।"

ऋषि: "ठीक कहा! इसीलिए हनुमान जी को 'भरत सम भाई' कहा जाता है।"

सभी: (प्रसन्न होकर) "जय हनुमान! जय महादेव!"

•••

पुत्र पर वार से पवन देव का क्रोध

बाल हनुमान: (आश्चर्य से) "वह चमकता हुआ लाल-लाल फल कितना बड़ा और सुंदर लग रहा है! मुझे इसे खाने जाना चाहिए।"

(बाल हनुमान सूर्य की ओर उड़ चलें। राहु उन्हें देख लेता है।)

राहु: (चौंकते हुए) "यह कौन है जो सूर्य की ओर बढ़ रहा है? यह तो मेरा समय है सूर्य को ग्रसने का! मैं तुरंत देवेन्द्र इंद्र को बताता हूँ।"

(राहु इंद्र के पास पहुँचता है।)

राहु: "देवराज, एक अद्भुत बालक सूर्य को निगलने की कोशिश कर रहा है। यदि ऐसा हुआ तो सूर्य का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसे रोको!"

इंद्र: "चिंता मत करो, राहु। मैं अभी देखता हूँ।"

(इंद्र अपने वज्र के साथ प्रकट होते हैं।)

इंद्र: "हे बालक, तुम कौन हो? सूर्य को फल समझने की मूर्खता मत करो। पीछे हट जाओ।"

बाल हनुमान: (मासूमियत से) "मुझे बहुत भूख लगी है, और यह मुझे फल जैसा लग रहा है। मैं इसे खाकर अपनी भूख मिटाऊँगा।"

(इंद्र क्रोधित होकर वज्र से प्रहार करते हैं। बाल हनुमान धरती पर गिरकर अचेत हो जाते हैं।)

(दृश्य 2: पवन देव को इस घटना का पता चलता है)

पवन देव: (क्रोध में) "यह क्या हुआ? मेरे पुत्र पर प्रहार किया गया! यह अपमान है। मैं अब पूरी सृष्टि को दिखाऊँगा कि पवन का महत्व क्या है।"

(पवन देव वायु प्रवाह रोक देते हैं। पूरी सृष्टि में हलचल मच जाती है। सभी जीव दम घुटने लगते हैं।)

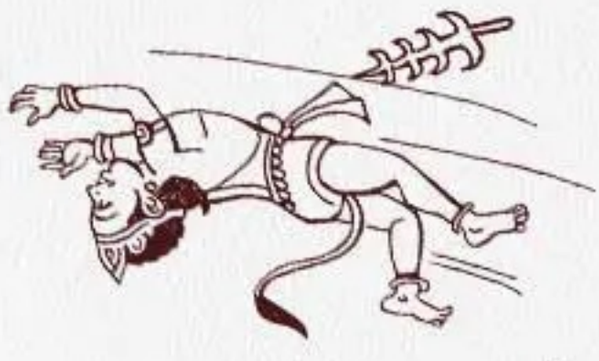

एक देवता: (घबराते हुए) "देवराज, पवन देव के क्रोध से सृष्टि थम गई है। हमें उन्हें शांत करना होगा।"

इंद्र: (अपराधबोध के साथ) "यह मेरी गलती है। मैं बिना सोचे-समझे बालक पर प्रहार कर बैठा। चलो, सभी मिलकर पवन देव से क्षमा माँगते हैं।"

(दृश्य 3: सभी देवता पवन देव के पास आते हैं)

ब्रह्मा: "हे पवन देव, कृपया शांत हो जाएँ। आपका पुत्र साधारण नहीं है। वह दिव्य शक्ति से युक्त है और संसार की रक्षा करेगा। यह घटना अनजाने में हुई है। हम आपसे क्षमा चाहते हैं।"

विष्णु: "बाल हनुमान के अद्भुत साहस और बल के कारण हम उन्हें अनेक वरदान देंगे, ताकि वह सदैव अजेय रहें।"

पवन देव: (थोड़ा शांत होते हुए) "यदि ऐसा है, तो मैं अपना क्रोध त्यागता हूँ। लेकिन मेरे पुत्र के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए।"

ब्रह्मा: "निश्चिंत रहें। हनुमान को अमरता का वरदान मिलेगा, और वह किसी भी अस्त्र-शस्त्र से अप्रभावित रहेंगे।"

(पवन देव वायु प्रवाह पुनः आरंभ कर देते हैं। सृष्टि में जीवन सामान्य हो जाता है।)

बाल हनुमान: (चेतना में आते हुए) "पिताजी, ये देवता कौन हैं?"

पवन देव: (मुस्कुराते हुए) "पुत्र, ये देवता तुम्हें वरदान देने आए हैं। अब तुम संसार के सबसे पराक्रमी और अमर योद्धा हो।"

सभी देवता: (एक स्वर में) "जय हनुमान! जय पवनपुत्र!

•••

हनुमान जी अपनी शक्तियां क्यों भूल गए

बाल हनुमान: (मुस्कुराते हुए) "अरे वाह! ये ऋषि लोग कितने शांत बैठे हैं। चलो, इनकी तपस्या में थोड़ी मस्ती करते हैं।"

(हनुमान तेजी से दौड़कर एक ऋषि की लंगोट खींच लेते हैं और हंसते हुए पेड़ पर चढ़ जाते हैं।)

ऋषि भृंग: (क्रोधित होकर) "अरे यह कौन शरारती बालक है? हमारी तपस्या में बाधा डाल रहा है!"

बाल हनुमान: (हंसते हुए) "ऋषिवर, थोड़ा मुस्कुराइए। तपस्या तो आप बाद में भी कर सकते हैं।"

(हनुमान कमंडल का पानी गिरा देते हैं और दौड़कर बगीचे से फल खाने लगते हैं।)

ऋषि अंगिरा: (धैर्य खोते हुए) "यह बालक अपनी चंचलता से हमें बार-बार परेशान कर रहा है। इसे कुछ शिक्षा देनी होगी।"

ऋषि भृंग: "हाँ, यह शिव का अंश है, लेकिन इसे अपनी शक्तियों का अहंकार हो गया है। इसे हमारी तपस्या का मान रखना चाहिए।"

ऋषि अंगिरा: (हनुमान को बुलाते हुए) "आओ, बालक। अब बहुत हो गया।"

बाल हनुमान: (मुस्कुराते हुए) "क्या बात है, ऋषिवर? अब क्या नया मज़ा आएगा?"

ऋषि भृंग: (गंभीरता से) "बालक, तुम्हारी शरारतें अब सीमा पार कर चुकी हैं। इसलिए हम तुम्हें शाप देते हैं कि तुम अपनी सारी शक्तियां भूल जाओगे। जब तक तुम्हें इनकी आवश्यकता न हो और कोई तुम्हें इन्हें याद न दिलाए, तब तक तुम्हें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं रहेगा।

बाल हनुमान: (हैरान होकर) "ऋषिवर! ऐसा न करें। मैं तो बस खेल रहा था।

ऋषि अंगिरा: "यह शिक्षा तुम्हारे लिए आवश्यक है। तुमसे भविष्य में बड़े कार्य होंगे, लेकिन उससे पहले तुम्हें अपनी चंचलता पर काबू पाना होगा।

(हनुमान बड़े हो जाते हैं और माँ सीता की खोज के अभियान में शामिल होते हैं। जामवंत उन्हें उनकी शक्तियां याद दिलाते हैं।)

जामवंत: "हनुमान, क्या तुम नहीं जानते कि तुम कितने बलशाली हो? तुम्हारे पास अपार शक्तियां हैं। तुम शिव के अंश हो। अपने भीतर की शक्ति को पहचानो।"

(जामवंत की बात सुनते ही हनुमान को अपनी सारी शक्तियां याद आ जाती हैं। उनकी चंचलता का स्थान अब विवेक और बलिदान ने ले लिया है।)

हनुमान: (आश्चर्य से) "मुझे सब याद आ गया! ऋषियों के शाप और मेरे दिव्य वरदान। अब मैं अपनी शक्तियों का सही उपयोग करूँगा। माँ सीता को ढूंढना और श्रीराम की सेवा करना मेरा धर्म है।"

ऋषि भृंग: (दूसरे ऋषियों से) "देखो, शाप का उद्देश्य पूरा हुआ। हनुमान अब अपनी शक्तियों का उपयोग धर्म और लोककल्याण के लिए करेंगे।"

ऋषि अंगिरा: "हाँ, यह शिव का अंश अब अपने महान कार्यों के लिए जाना जाएगा।"

सभी: "जय पवनपुत्र हनुमान! जय श्रीराम!"

•••

हनुमान और उनके पुत्र मकरध्वज की गाथा

मकरध्वज: (शक्तिशाली मुद्रा में) "तुम मेरे पिता हो, हनुमान जी। मैं मकरध्वज हूँ, तुम्हारा पुत्र!"

हनुमान: (आश्चर्यचकित होते हुए) "क्या तुम मुझे अपना पिता मानते हो? यह कैसे संभव है?"

मकरध्वज: "हाँ, पिताजी! जब आप लंका को दहन करने के बाद समुद्र के ऊपर से जा रहे थे, तब आपके शरीर से निकलते पसीने ने एक मादा मगरमच्छ को अपना भोजन बना लिया, और उससे ही मैं उत्पन्न हुआ।"

हनुमान: (गुस्से में) "तुम मुझसे झूठ कह रहे हो! कैसे हो सकता है कि मैं एक मगरमच्छ के साथ ऐसा कुछ करूँ? तुम क्या मजाक उड़ा रहे हो?"

मकरध्वज: (धैर्यपूर्वक) "पिताजी, मैं आपको पूरी घटना समझाता हूँ। जब आप लंका दहन कर समुद्र के ऊपर से उड़े, तो आपके शरीर का तापमान अत्यधिक गरम था। आपके शरीर से जो पसीना टपका, वह मादा मगरमच्छ के मुँह में गिरा। उस पसीने से ही मैं जन्मा।"

हनुमान: (सोचते हुए) "यह अद्भुत है! तो तुम सचमुच मेरे पुत्र हो। मुझे याद आता है कि उस समय मेरा शरीर तप से जल रहा था, और पसीने के कारण समुद्र में गर्मी फैल रही थी।"

(हनुमान की आँखों में साक्षात्कार का भाव दिखाई देता है।)

हनुमान: "मकरध्वज, तुम मेरे ही पसीने से उत्पन्न हुए हो, तो तुम्हें मुझसे किसी तरह का शंका नहीं होनी चाहिए। अब मैं समझ गया हूँ।

मकरध्वज: "पिताजी, अब मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। मुझे विश्वास था कि आप मुझे पहचानेंगे, और इसीलिए मैं पाताल लोक में आपके सामने आया हूँ।"

हनुमान: (मुस्कुराते हुए) "मकरध्वज, तुम मेरे पुत्र हो, और तुम्हारा अस्तित्व ही मेरे लिए एक उपहार है। तुम्हारे जन्म के पीछे का कारण अद्भुत है। अब तुम अपना धर्म निभाओ और इस धरती पर शुभ कार्य करो।"

मकरध्वज: "धन्यवाद पिताजी! आपके आशीर्वाद से मैं हर कठिनाई को पार करूँगा।"

हनुमान: "तुम पवित्र और वीर हो, तुमसे अधिक योग्य कोई नहीं हो। अब तुम अपने मार्ग पर चलो और अपने कार्यों से मेरी कर्तव्यपरायणता को बढ़ाओ।"

मकरध्वज: (आशीर्वाद लेते हुए) "पिताजी, मैं आपके आदेशों का पालन करूं गा और अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाऊँगा।"

हनुमान: "याद रखो, मकरध्वज, तुम मेरे अंश हो, और तुम्हारी शक्ति अनंत है। तुम हमेशा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलना।"

(मकरध्वज और हनुमान एक दूसरे को नमन करते हैं।)

सभी देवता: "जय पवनपुत्र हनुमान! जय मकरध्व

•••

मृत्युदंड पाने के बाद भी हनुमान को राम जी मार न सके

नारद जी: (ऋषि आश्रम में आते हुए) "हे हनुमान! आज से तुम सभी ऋषियों की आवभगत का कार्य करो, लेकिन ध्यान रखना, विश्वामित्र जी का सत्कार मत करना।"

हनुमान: (आश्चर्यचकित होकर) "आज्ञा महाराज, परंतु क्यों?"

नारद जी: (गंभीरता से) "यह एक रहस्य है। तुम बिना कोई प्रश्न किए मेरी बात का पालन करो।"

हनुमान: (साष्टांग प्रणाम करते हुए) "आपका आदेश शिरोधार्य है, नारद जी।

(हनुमान जी अन्य ऋषियों की आवभगत करते हैं, लेकिन विश्वामित्र जी के पास जाते हुए उनका सत्कार नहीं करते।)

विश्वामित्र: (गुस्से में) "यह क्या! इस बालक ने मुझे नज़रअंदाज़ किया! यह कैसे हो सकता है? हनुमान! तुम्हारी यह अपमानजनक करतूत मेरे लिए सहन नहीं की जा सकती!"

(विश्वामित्र राम से मिलने जाते हैं।)

विश्वामित्र: "राम! तुम्हारे प्रिय हनुमान ने मुझे अपमानित किया है। उसे तुरंत मृत्यु दंड दिया जाए।"

राम: (चिंतित होते हुए) "गुरुजी, आपके आदेश के बिना मैं कैसे कार्य कर सकता हूँ? मेरी भक्ति और प्रेम हनुमान के प्रति कभी कम नहीं होगा, लेकिन गुरु की आज्ञा को पूरा करना मेरा धर्म है।

(राम हनुमान को मृत्यु दंड देने की तैयारी करते हैं।)

राम: (गहरे शोक में) "हनुमान, तुम मेरे प्रिय भाई हो, लेकिन गुरु की आज्ञा का पालन करना मेरी जिम्मेदारी है।

(राम ब्रह्मास्त्र समेत कई अस्त्र हनुमान पर छोड़ते हैं, लेकिन हनुमान शांत होकर राम का नाम जपने लगते हैं।)

हनुमान: (मन में) "राम के नाम का जाप करते हुए चिंता का कोई कारण नहीं है। गुरु की आज्ञा का पालन करना होगा, और मैं जानता हूँ कि भगवान राम की कृपा से कुछ भी नहीं होगा।"

(राम के सारे अस्त्र विफल हो जाते हैं, और हनुमान बिना किसी शारीरिक हानि के खड़े रहते हैं।)

विश्वामित्र: (यह सब देख कर चौंकते हुए) "यह क्या चमत्कार है? राम का हर अस्त्र हनुमान पर बेकार हो गया! मुझे यह घटना विस्तार से जाननी चाहिए।"

(विश्वामित्र राम से पूछते हैं।)

विश्वामित्र: "हे राम! यह कैसे संभव है कि तुम्हारे प्रहार हनुमान पर व्यर्थ हो गए? बताओ, क्या रहस्य है?"

राम: (मौन होते हुए) "गुरुजी, हनुमान ने नारद जी के आदेश का पालन किया। नारद जी ने कहा था कि हनुमान केवल राम नाम का जाप करें, कुछ नहीं होगा। हनुमान ने यह आज्ञा पूरी तरह से मानी, और उनका विश्वास राम में अडिग था।"

(विश्वामित्र को समझ में आता है।)

विश्वामित्र: (गहरी शांति से) "राम! अब मैं समझ गया। हनुमान ने अपने विश्वास और भक्ति से यह सिद्ध कर दिया कि राम का नाम सर्वशक्तिमान है। अब मैं अपने क्रोध को समाप्त करता हूँ।"

(विश्वामित्र हनुमान के पास आते हैं।)

विश्वामित्र: "हे हनुमान! मैं तुमसे खिन्न था, लेकिन अब मुझे तुम्हारे विश्वास और भक्ति का पूर्ण ज्ञान हो गया है। मुझे तुम पर गर्व है।"

हनुमान: (साष्टांग प्रणाम करते हुए) "गुरुजी, आपके आशीर्वाद से मुझे जीवन की सच्चाई समझ में आई।"

राम: (आशीर्वाद देते हुए) "हनुमान, तुमने हमें सिखाया कि सच्चे भक्त का मार्ग कभी विफल नहीं होता। तुमसे हमें महान शिक्षा मिली है।

•••

गदाधारी भीम का घमंड भी उतार दिया

(भीमसेन वनवास के दौरान घने जंगल में भ्रमण करते हुए अपने भाइयों से रुठे हुए थे। अचानक उन्हें रास्ते में एक वृद्ध वानर दिखाई देता है, जो अपनी पूंछ फैलाए बैठा था।)

भीम: (गुस्से में) "अरे! ये क्या है? तुम एक वानर होकर इस तरह से रास्ते में क्यों बैठ हो? हटा दो अपनी पूंछ, रास्ता रोक रखा है!"

वानर: (शांत स्वभाव से) "पुत्र, मैं थका हुआ हूँ, मेरा शरीर अब असमर्थ हो गया है। अगर तुम चाहो तो स्वयं मेरी पूंछ को हटा सकते हो।"

भीम: (घमंड से) "क्या तुम मजाक कर रहे हो? तुमसे यह काम नहीं होगा, मुझे ही इसे उठाना पड़ेगा।"

(भीम ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी और पूंछ को उठाने का प्रयास किया, लेकिन पूंछ बिल्कु ल भी नहीं हिली।)

भीम: (उत्तेजित होते हुए) "यह क्या! एक वानर की पूंछ भी मैं नहीं उठा सकता? ऐसा नहीं हो सकता!"

(भीम ने और भी अधिक प्रयास किया, लेकिन पूंछ वही की वही रही।)

(भीम को अब महसूस हुआ कि यह वानर कोई सामान्य प्राणी नहीं है।)

भीम: (संकुचित होते हुए) "यह कोई सामान्य वानर नहीं है। मुझे अब समझ में आता है कि यह कोई दिव्य आत्मा है।"

(भीम ने वानर से विनम्रता से कहा।)

भीम: "हे पवित्र वानर, कृपया मुझे अपना असली रूप दिखाइए। मैं आपके दर्शन का भाग्य चाहता हूँ।"

(वानर ने मुस्कुराते हुए अपना असली रूप प्रकट किया और हनुमान जी के दिव्य रूप में प्रकट हुए।)

हनुमान: (हंसी में) "भीम, तुमने अपनी शक्ति का बखान करते हुए मुझे चुनौती दी, लेकिन अब तुम समझ गए कि कौन तुम्हारे सामने था।"

भीम: (आश्चर्यचकित और श्रद्धा से) "आप! आप स्वयं हनुमान जी हैं! मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे इस प्रकार का आशीर्वाद मिलेगा।"

हनुमान: (भीम से कहा) "भीम, तुम अपनी शक्ति और बल का अहंकार करते हो, लेकिन याद रखो, शक्ति केवल सच्चे प्रेम और भक्ति से आती है। तुमने मुझे चुनौती दी थी, लेकिन अब समझो कि बल के साथ-साथ धैर्य और संयम भी आवश्यक होते हैं।"

भीम: (नम्र होते हुए) "प्रभु, मैं अब समझ गया। मुझे अपनी शक्ति का घमंड नहीं करना चाहिए।"

हनुमान: "तुमने जो युद्ध में अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है, वह बहुत महान है, लेकिन तुम्हे यह याद रखना होगा कि विजय केवल आंतरिक शक्ति और भगवान के आशीर्वाद से मिलती है।"

(हनुमान जी ने भीम को विजय का आशीर्वाद दिया।)

हनुमान: "पांडवों की विजय निश्चित है, तुम्हारी शक्ति और धैर्य से ही तुम कौरवों पर विजय प्राप्त करोगे। भगवान श्री कृष्ण का आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा।

(भीम ने हनुमान जी के चरणों में सिर झुका दिया।)

भीम: "प्रभु, आपने मेरी आँखों से घमंड की परत हटा दी। मैं अब अपने जीवन में विनम्रता और भक्ति का पालन करूं गा।"

(हनुमान जी ने भीम को आशीर्वाद दिया और उनका मार्गदर्शन किया।)

हनुमान: "जाओ, भीम, तुम पांडवों की शक्ति हो। तुम्हारी विजय निश्चित है।"

(हनुमान जी के आशीर्वाद से भीम का अहंकार दूर हो गया और उनका हृदय शांति से भर गया।)

•••

अर्जुन का अहंकार भी हनुमान जी ने तोड़ दिया

(अर्जुन रामेश्वरम में श्री राम की पूजा करने पहुंचे, जहाँ एक वानर श्रीराम की भक्ति में मग्न था। अर्जुन ने अपने धनुर्विद्या के अहंकार में आकर एक वाण चलाया और वानर की पूजा में विघ्न डाल दिया।)

अर्जुन: (हंसी में) "श्री राम जैसे महान धनुर्धर को क्या आवश्यकता थी पत्थरों का पुल बनाने की? अगर मेरे पास होता तो मैं वाणों का पुल बना सकता था और लंका में सेना को शीघ्रता से भेज सकता था!"

(तभी वानर रूप में हनुमान जी प्रकट होते हैं।)

हनुमान: (शांति से) "अर्जुन, तुम महान धनुर्धर हो, लेकिन तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि वाणों से बना पुल पत्थरों के पुल का मुकाबला नहीं कर सकता। हमारी सेना में ऐसे महान योद्धा थे, जिनका वजन वाणों से बने पुल नहीं सह सकते थे। इसलिए पत्थरों का पुल बनाना पड़ा।"

अर्जुन: (अहंकार से) "यह ठीक है, लेकिन मैं आपको दिखाऊँगा कि वाणों का पुल भी बना सकता हूँ।"

(अर्जुन ने अपनी दिव्य शक्ति से एक अत्यंत विशाल वाण चलाया, और वह समुद्र पर एक पुल बना दिया। वानर रूप में छिपे हनुमान जी ने इसे देखा।)

अर्जुन: (मुस्कुराते हुए) "देखो, हनुमान! मैंने वाणों का पुल बना दिया है, अब यह कैसे टूटता है?"

(हनुमान जी ने उसे चुनौती दी और पुल पर चढ़े। जैसे ही वह वाणों पर चढ़े, पुल टूटकर समुद्र में गिर गया।)

हनुमान: (मुस्कुराते हुए) "अर्जुन, तुम्हारी शक्ति महान है, लेकिन जैसे मैंने कहा था, वाणों का पुल स्थिर नहीं रह सकता। यह पुल केवल एक सच्ची चुनौती के सामने झुकता है।"

अर्जुन: (निराश होते हुए) "हनुमान जी, आप सचमुच महान हैं। मैंने अपने अहंकार में आकर आपसे अनावश्यक चुनौती दी। कृपया मुझे माफ करें।"

(हनुमान जी ने अर्जुन से कहा।)

हनुमान: (दया और प्रेम से) "अर्जुन, तुम एक महान योद्धा हो, लेकिन कभी भी अहंकार का पालन नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी शक्ति को केवल स्वयं के लिए देखता है, वह अपने ही बल से खुद को गिरा लेता है।"

अर्जुन: (विनम्रता से) "प्रभु, आपके आशीर्वाद से मैंने अपने अहंकार को पहचाना। मैं हमेशा याद रखूंगा कि केवल भक्ति और विनम्रता से ही हम महानता प्राप्त कर सकते हैं।"

(हनुमान जी ने अर्जुन को आशीर्वाद दिया।)

हनुमान: "तुमने अपने अहंकार को पहचाना है, यही सबसे बड़ी बात है। इस प्रकार, तुम अब महान धनुर्धर के साथ-साथ एक सच्चे भक्त भी बनोगे।"

(अर्जुन ने हनुमान जी के चरणों में सिर झुका दिया। हनुमान जी ने उन्हें विजय का आशीर्वाद दिया।)

•••

हनुमान ने शनिदेव को रावण के चंगुल से मुक्त कराया

(रावण ने अपनी शक्ति के अहंकार में आकर सभी ग्रहों को बंदी बना लिया था, और देवता भी उसके सामने कुछ नहीं कर सकते थे। हनुमान जी लंका में प्रवेश करते हैं, और यहां खलबली मच जाती है।)

रावण: (गुस्से में) "यह कौन है जो मेरे राज्य में आकर शोर मचाता है? पकड़ो इसे!"

(रावण के सैनिकों से बचते हुए, हनुमान जी रावण के महल में प्रवेश करते हैं और वहां उन्हें शनिदेव की बंदी अवस्था का पता चलता है। शनिदेव रावण के कारागार में बंद हैं।)

हनुमान: (शांत और धैर्य से) "हे शनिदेव, आप यहां कैसे आए?"

शनिदेव: (दुखी स्वर में) "मेरे पापों के कारण रावण ने मुझे बंदी बना लिया है। वह मुझसे डरता है, क्योंकि मेरे ग्रह का प्रभाव अत्यंत शक्तिशाली है। वह मुझसे भयभीत है, और मुझे अपने वश में रखने के लिए मुझे बंदी बना रखा है।"

हनुमान: (साहस से) "आप चिंता न करें, शनिदेव! मैं आपके साथ हूं।"

(हनुमान जी ने अपनी अपार शक्ति का प्रयोग किया और रावण के महल में प्रवेश किया। उन्होंने शनिदेव को रावण के चंगुल से मुक्त कर दिया।)

हनुमान: (रावण से कहते हुए) "रावण! तुमने एक महान देवता को बंदी बना रखा है। अब मैं तुम्हारी मंशा को विफल करने आया हूं।"

(हनुमान ने अपनी गदा से रावण के महल के दरवाजों को तोड़ दिया, और शनिदेव को मुक्त किया।)

रावण: (क्रोधित होकर) "तुमने यह क्या किया, हनुमान! तुम मेरी शक्ति के सामने क्यों खड़े हो?"

हनुमान: "रावण, तुम अपनी शक्ति और अहंकार में अंधे हो। यह ब्रह्माण्ड देवताओं का है, और किसी का भी बंदी बनाना सही नहीं है।"

(शनिदेव ने अपनी मुक्ति के बाद हनुमान जी को आशीर्वाद दिया।)

शनिदेव: "हनुमान जी, आपने मुझे रावण के चंगुल से मुक्त किया। मैं आपके कृतज्ञ हूं। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं कि जो भी व्यक्ति सच्चे भाव से आपकी भक्ति करेगा, उस पर मेरा कोई प्रकोप नहीं होगा। मैं उस पर अनिष्ट नहीं करूं गा, और उसका जीवन सुखमय होगा।"

हनुमान: (नम्र होकर) "आपका आशीर्वाद मेरे लिए अमूल्य है, शनिदेव। मैं हर व्यक्ति को यही सलाह दंगू ा कि वे सच्चे दिल से भगवान की भक्ति करें और इस आशीर्वाद का लाभ उठाएं।"

(शनिदेव ने हनुमान जी का आशीर्वाद दिया और रावण को हराने की योजना बनाई।)

शनिदेव: "हे हनुमान, तुमने मेरा उद्धार किया, अब मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम्हारी भक्ति और पराक्रम की कोई सीमा नहीं है। तुम सच्चे भक्तों के लिए हमेशा आशीर्वाद देने वाले रहोगे।"

• • •

छह महीने बाद हनुमान जीवित हुए

(हनुमान जी, भगवान राम के आदेश पर, माँ सीता की खोज में विलंका पहुँचते हैं। वहाँ उन्हें एक जादुई सरोवर मिलता है, जो ग्राम देवी के प्रभाव से विषैला था। हनुमान जी शत्रुता की भावना से उस सरोवर का जल पीने पहुँचते हैं।)

हनुमान: (सोचते हुए) "माँ सीता का पता नहीं चला, अब मुझे इस स्थान के रहस्यों को समझना होगा।"

(हनुमान जी जल पीने के लिए सरोवर के पास पहुँचते हैं, और जैसे ही जल पीते हैं, ग्राम देवी उनकी गर्दन में बैठ जाती हैं। जल पीने के कारण हनुमान जी तुरंत विष के प्रभाव से मृत्यु को प्राप्त होते हैं।)

(सभी देवता और ब्रह्माण्ड में हांहांकार मच जाता है।)

(पवन देव अपने पुत्र की मृत्यु से अत्यंत क्रोधित होते हैं और अपनी गति रोक देते हैं, जिससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हलचल मच जाती है।)

पवन देव: (क्रोधित होकर) "यह क्या हुआ? मेरे पुत्र हनुमान को विष से मारा गया। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता!"

(देवता घबराए हुए पवन देव से निवेदन करते हैं।)

इंद्र: "हे पवन देव, हम समझते हैं कि यह घटनाक्रम अत्यंत दुखद है, लेकिन कृपया शांत हो जाइए। देवताओं से वचन लें कि हम हनुमान जी को पुनः जीवित करेंगे।"

(पवन देव का क्रोध शांत होता है, और देवता ब्रह्मा के पास जाकर हनुमान जी के पुनर्जीवन का वचन लेते हैं।)

ब्रह्मा: "हम वचन देते हैं कि हनुमान जी को जीवित किया जाएगा। वे अमर हैं, उनके जीवन का कोई अंत नहीं हो सकता।"

(देवताओं ने ब्रह्मा के वचन के बाद, हनुमान जी को पुनर्जीवित किया। हनुमान जी पुनः जीवन में लौट आए, और पवन देव ने उन्हें गले लगाया।)

पवन देव: (शांत होते हुए) "हे हनुमान, तुम मेरे प्रिय पुत्र हो। तुम्हारी मृत्यु से मुझे अत्यधिक दुःख हुआ था। देवताओं का वचन पूरा हुआ, और तुम अब पुनः जीवित हो।"

हनुमान: (धन्यवाद देते हुए) "हे पवनदेव, आपका आशीर्वाद और देवताओं का वचन मेरे लिए अमूल्य है। अब मैं अपना कार्य पूरा करूँगा।"

(हनुमान जी पुनः भगवान राम की सेवा में लौटते हैं, और उन्हें अपने प्राणों के महत्व का अहसास होता है।)

हनुमान: (सोचते हुए) "जीवित रहकर मैं प्रभु राम की भक्ति में और अधिक बलपूर्वक कार्य करूंगा। यह जीवन केवल उनके चरणों में समर्पित है।"

• • •

हनुमान जी के प्रकोप से कर्ण मरते मरते बचा

(अर्जुन और कर्ण के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था। कर्ण ने कुछ वाण श्री कृष्ण को भी मारे, जिससे उनका कवच टूट गया। यह देख हनुमान जी बहुत क्रोधित हो गए।)

कर्ण: (अगला वाण चलाते हुए) "अब तुम नहीं बच सकोगे, अर्जुन!"

(कर्ण का वाण श्री कृष्ण को लगा, उनके कवच का टूटना देख हनुमान जी का क्रोध और बढ़ जाता है। वे युद्ध भूमि में प्रकट होते हैं, और उनका क्रोध प्रचंड रूप में दिखाई देता है।)

हनुमान: (गर्जना करते हुए) "कर्ण! तुमने श्री कृष्ण को आहत किया है, तुम्हारी निष्ठुरता का परिणाम अब भुगतना पड़ेगा!"

(हनुमान जी की आग्नेय दृष्टि कर्ण पर पड़ती है, और उनका रूप इतना भयंकर हो जाता है कि कर्ण और उनके सारथी कांपने लगते हैं। हनुमान जी की मुट्ठियाँ कस जाती हैं और उनकी पूंछ हवा में काल के समान लहराने लगती है।)

कर्ण: (काँपते हुए) "यह क्या हो रहा है? यह शक्ति कहाँ से आई?"

कर्ण के सारथी: (डरते हुए) "यह तो हनुमान जी की शक्ति है! हम सब का काल आ गया है!"

(हनुमान जी ने क्रोधित होकर आकाश में गरजते हुए कर्ण को घूरना शुरू किया। कर्ण अपने प्राणों की रक्षा के लिए भयभीत हो जाता है।)

(श्री कृष्ण यह सब देख रहे थे, और उन्होंने तुरंत हनुमान जी से शांति की प्रार्थना की।)

श्री कृष्ण: (शांत स्वर में) "हे हनुमान, कृपया क्रोधित मत होइए। यह युद्ध धर्म के अनुसार हो रहा है, और कर्ण को उसकी नियति का सामना करना है। अगर आप इस समय क्रोधित होते हैं, तो कर्ण की जान समाप्त हो जाएगी।"

(हनुमान जी की क्रोध भरी मुट्ठियाँ ढीली होती हैं, और उनकी आग्नेय दृष्टि भी हल्की पड़ जाती है। वे श्री कृष्ण की बातों को समझते हुए शांति से खड़े हो जाते हैं।)

हनुमान: (शांत होते हुए) "हे श्री कृष्ण, मैंने आपको हमेशा सर्वश्रेष्ठ माना है। आपका आदेश सर्वोपरि है।"

(हनुमान जी का प्रकोप शांत होता है और कर्ण को जीवन की दूसरी सांस मिलती है। कर्ण की जान बच जाती है।)

कर्ण: (हैरान होकर) "धन्य हैं श्री कृष्ण, जिन्होंने मेरी जान बचाई। मैं उनकी शक्ति को पहचानता हूं।"

•••

हनुमान जी ने रूद्र मंत्र से बंधे यमराज की बेड़ियां तोड़ दी

(रावण, शिव भक्त, ने यमराज को रुद्र मंत्र से बांध रखा था और आदेश दिया था कि जो भी बिना अनुमति के लंका में प्रवेश करेगा, उसे पीठ पर लात मारी जाएगी।)

रावण: (क्रोधित होकर) "यह मेरे महल में बिना अनुमति के कौन आता है? सभी को हर हाल में यह सजा मिलनी चाहिए!"

(हनुमान जी लंका में प्रवेश करते हैं और यमराज से उनका सामना होता है। यमराज हनुमान को देख कर घमंड से कहते हैं।)

यमराज: (घमंड से) "तुम कौन हो जो बिना अनुमति के लंका में आए हो? मैं रुद्र मंत्र से बंधा हुआ हूं, और इसीलिए मुझे किसी से डर नहीं लगता। तुम मेरी शक्तियों को समझ नहीं सकते। देखो, मैं तुम्हें क्या सजा देता हूं!"

/ Mereramapp

(यमराज ने अपनी पूरी ताकत से हनुमान की पीठ पर एक जोरदार लात मारी।)

(हनुमान जी एक पल के लिए भी विचलित नहीं होते। वे ठान लेते हैं कि वे यमराज के घमंड को तोड़ेंगे।

हनुमान: (शांत और निश्चल स्वर में) "तुम कह रहे हो कि रुद्र मंत्र से बंधे हो, लेकिन मैं जानता हूं कि परमेश्वर की इच्छा के आगे कोई भी बंधन टिक नहीं सकता।"

(हनुमान जी ने एक झटके में यमराज की रुद्र मंत्र से बंधी बेड़ियां तोड़ दी। इस अद्भुत शक्ति को देख यमराज के होश उड़ जाते हैं।)

यमराज: (हैरान और चकित होकर) "यह क्या हुआ! मैंने स्वयं को रुद्र मंत्र से बांध रखा था, लेकिन यह शक्ति कहां से आई?"

(हनुमान जी ने यमराज को मुस्कुराते हुए देखा, और उनके घमंड को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।)

(यमराज, अब पूरी तरह से नतमस्तक हो जाते हैं, और वे हनुमान जी से क्षमा मांगते हैं।)

यमराज: (विनम्रता से) "हे हनुमान! तुम तो सच्चे महान शक्ति के मालिक हो। मेरा घमंड टूट चुका है, और मैं तुम्हारी शक्ति से अभिभूत हूं। कृपया मुझे क्षमा करें।"

हनुमान: (नम्रता से) "यमराज, तुम दया के देवता हो। तुमने कभी कोई अपराध नहीं किया। तुम्हारा कार्य बस कर्तव्य निभाना है। तुम्हारे घमंड का कोई स्थान नहीं है, परंतु तुम्हारी शरण में कोई भी नहीं आता।"

(यमराज ने हनुमान जी से आशीर्वाद लिया और उनके मार्गदर्शन को स्वीकार किया।)

यमराज: "हे हनुमान! तुम्हारी शक्ति को देखकर मैं सदैव नतमस्तक रहूंगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हारी भक्ति से कोई भी बंधन तुम्हें नहीं बांध सकता।"

(हनुमान जी ने यमराज का सम्मान किया और शांति से लंका में अपने कार्य में लगे रहे।)

•••

Mere Ram- मेरे राम

SCAN AND GET IT ON
Google Play